# फारुख एक नंदनवन

फारूख नामक नंदनवन में,
मोती जैसे तीन साल ।
अनमोल मोती जैसे तीन साल।
ताज पहनने आये राहजादों,
ज़रा सोचो अपना हाल।
कोलज रूपी बाग में खिले,
कई रेग के खूबसूरत फूल।
इस आँगन में पखूडियाँ खिलाए,
खूरा नज़र आये कुछ नये फूल।
फूलों के इस समूह में कुछ काटों ने,
कर दिये नये फूलों के चेहरे पीले।
और माली को आते देख
हो गए इल सबके नैन गीले।
इन काटों की संगत बनी प्यारी।
मिली नये फूलों को भी,
बाहरी दूशमनों से बचाने वाली,
खुशबुदार और अनोखी यारी।
नंदनवन के फूल चाहे झड़ जाए,
मगर कभी न झड़े ये यादों के फूल,
बिना मुरझाए दोस्ती रूपी पखुड़िया फैलाए,
महकते रहेगें बनके सदा बहार।
लिखे गए इतिहास खून से राजाओं के,
पर लिखे गए आसुओं से इतिहास दोस्ती का,
बति गए यूँही तीन सालों का सफर,
कुछ भी न भूले और बहुत कुछयाद रह गए उर्म भर।

**मूल तमिल रचना :-**

---

ramesh
first Bsc. chemistry

# वह हसीन ख्वाब

बेचैन इस कदर,
सोया न रात भर।
पलकों से लिख रहा था,
तेरा नाम चाँद पर।
आखें मूदंते ही पलकें झपकते ही,
पहूँचा मै झील और वादियों के उस पार।
और अचानक नज़र जा पडी,
एक अंजान चेहरे पर,
जिसका रहा मुझे सदा इन्तज़ार।
देख कर जिसे बिजली सी गिरी दिल पर,
इतनी मासूमियत थी इसकी नज़रों में।
कुछ कहने की चाह थी उससे,
फिर भी रह गया मन ही मन में।
तेरी वह शर्मीली भरी नज़ाकत,
न जाने क्या जादू मुझ पर कर गया।
दूर से एक तीर सी आई,
और प्यायल मेरे इस दिल को कर गया।
हवा के एक झोके की तरह,
वो मेरे सामने निखर कर गुज़र गई।
जिसे देख मेरा ये दिल,
खुशियों से रंग लाया।
असने मुझे मुझकर न देखा दुबारा,
जिसकी लादों से मैं बस,
रह गया उर्म भर कुंवारा।
वो एक हसीन ख्याब था, एक हसीन था, एक हसीन ख्वाब,
जिसकी यादों ने मुझे बहुत सताया।
बंद आँखों से देखा आच कुछ पल जिसे,
खूली आँखों से उसी को ही गज्याया

---

mohammed i.k.
second BSc. chemistry